



## प्रभावित न होना! Not impressed!

Christian Science Sentinel

Author :- Teresa Doan  
Vol. 112, No. 22, May 31, 2010

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप इस पल कौन सी परेशानियों का सामना कर रहे हो, आपके पास परमेश्वर का दिया हुआ अधिकार है कि आप घटनाओं को आध्यात्मिक देखें। इसी क्षण, जहाँ आप हो, आप अपने आध्यात्मिक प्रभुत्व को पकड़ सकते हो तथा एक मसले से प्रभावित होने को नकार सकते हो। यह एक धारणा है जो मैं निरन्तर अभ्यास में लाती हूँ।

मेरी बेकर एडी पाठकों को सॉयस एण्ड हेल्थ में याद दिलाती है कि “जीसस ने रास्ता चिन्हित किया। संसार के नागरिको, ‘ परमेश्वर के बच्चों की उत्कृष्ट स्वतन्त्रता’ को स्वीकार करो और मुक्त हो जाओ। यह आपका दिव्य अधिकार है” (पृष्ठ 227)। यह जानकर हमारा हौसला बढ़ जाता है कि परमेश्वर, हमारे स्वर्गिक पिता ने हम सब को जीसस के अनुयायी होने के नाते साहस के साथ धन्य किया। बार-बार वह हमें भयभीत या किसी भी प्रकार की बुराई से प्रभावित न होने का निर्देश देते हैं। वह हमें बार बार दर्शाते हैं कि हम अपने अनुभव के स्वामी हैं।

बहुत साल पहले मेरे एक मित्र ने मुझे बताया कि कोई भी कह सकता था कि जीसस समस्याओं पर प्रतिक्रिया नहीं करते थे बल्कि, समस्याएं लुप्त हो जाती थी उसके समक्ष जिसे वह जानते थे और जो उनका अस्तित्व था।

मैं जान रही हूँ कि अपनी परिस्थितियों पर प्रभुत्व पाने की कुंजी, शांति से सीखना और आत्मविश्वास के साथ सत्य का अभ्यास करना है न कि समस्या के आगे ढह जाना। बहुत साल पहले मेरे एक मित्र ने मुझे बताया कि कोई भी कह सकता था कि जीसस समस्याओं पर प्रतिक्रिया नहीं करते थे बल्कि, समस्याएं लुप्त हो जाती थी उसके समक्ष जिसे वह जानते थे और जो उनका अस्तित्व था।

\* जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in [language], please see <http://translations.christianscience.com>

इसलिए मैं अक्सर सोचती, कि इस क्षण मैं क्या जानती हूँ और मेरा क्या अस्तित्व है? क्या मैं विचारों में सम्पूर्ण मॉडल को पकड़े रहती हूँ (देखें सॉयस एण्ड हैल्थ, पृष्ठ 248), और लगातार अपने आपको और दूसरों को आध्यात्मिक, स्वस्थ, उपयोगी, और परमेश्वर की प्रसन्न अभिव्यक्तियों के रूप में देखती हूँ?

मैंने सीखा कि ये आध्यात्मिक गुण हमारी दिव्य विरासत को सँवारते हैं और इस विचार को पकड़े रहने से हमारी सोच अच्छे के साथ जुड़ी रहती है जैसे ही हम इस सम्पूर्णता की स्थिति को लगातार अपना लेते हैं, हमारे लिए यह और भी ज्यादा स्वाभाविक हो जाता है कि हम चिंताजनक परिस्थितियों में प्रतिक्रिया न करें। हम भीतर धैर्य और दृढ़ता पाते हैं हमारी प्रतिक्रिया करुणामयी और उपयोगी होती है, जैसे हम निरन्तर अपनी आध्यात्मिक विरासत को पहचानते हैं, हम जहाँ पर हैं, अच्छे को ढूँढते हुए। इसका मतलब यह नहीं है कि झूठे प्रभावों से परे हटना सदा आसान होता है। परन्तु जब हम इस समझ तक पहुँच जाते हैं कि हम अपनी समस्याओं को अवसर की तरह देखें और निःसन्देह उनका सामना करने के लिए तैयार हों। फिर हम देखते हैं कि हमारे ऊपर उनका कोई नियन्त्रण नहीं है।

कई बार हम किसी खोफनाक विचार जिसके विरुद्ध हम लड़ने की कोशिश कर रहे होते हैं, डरावनी परिस्थितियाँ, जो कि परमेश्वर के नियन्त्रण के बाहर प्रतीत होती हैं हमें अपने अधिकारों का प्रयोग करने से रोकने की कोशिश करती हैं। परन्तु सत्य यह है कि हम पहले से ही स्वर्ग के साम्राज्य में रहते हैं। परमेश्वर का ब्रह्माण्ड हर जगह मौजूद है। हर पल ओर हर जगह हम अच्छे को प्रत्यक्षीकृत करने का “ भरसक प्रयत्न ” ही नहीं कर रहे; अपितु इसी वक्त हम परमेश्वर की सम्पूर्णता की गवाही हैं। हम इस सत्य में आराम पा सकते हैं। उसकी अनन्त सम्पूर्णता के साथ एक हो जाओ। शांत रहो।

मेरी बेकर एडी के लेखन के दो सुन्दर पद्यांशों में वह कहती है, “ उसी परिस्थिति में जिसे तुम्हारी पीड़ित सोच कष्टदायक और दुःखदायी मानती है, प्रेम अनजाने में एक फरिश्ते को आमंत्रित कर सकता है और कभी भी कल के लिए मत पूछो : यह काफी है कि दिव्य प्रेम एक हर समय मौजूद मदद है; और यदि आप इंतज़ार करते हो, कभी संदेह न करते हुए आपके पास वह सब होगा जिसकी हर पल आपको ज़रूरत है (मिसलेनियस राइटिंग्स 1883 – 1896, पृष्ठ 307) यह सत्य सदा विद्यमान है कि तुम कौन हो, परमेश्वर के स्वस्थ, खुश और प्यारे बच्चे होने के नाते।

इन पंक्तियों के साथ, यहाँ पर बाइबल का अंश है जो कहता है “ परमेश्वर की प्रतीक्षा करो। ” (भहनसंहिता 27:14) प्रतीक्षा करने से अभिप्राय है स्थिर रहना और बने रहना। कितना अद्भुत और प्रेरणात्मक! जैसे हम परमेश्वर के फरिश्तों की प्रतीक्षा करते हैं, हमें निराशापूर्ण उदासी से ऊपर उठाने के लिए; हम अपने आपको उसकी मौजूदगी में स्थिर रहते हुए और उसके प्रेम में बने हुए पाएंगे।

कुछ साल पहले, मुझे अपनी आध्यात्मिक माँसपेशियों को प्रयोग करने का अवसर मिला, कि दर्द और चोट के प्रमाण मुझे प्रभावित न कर सकें। मैं दो अलग-अलग वैक्युम क्लीनरस के साथ सफाई कर रही थी, एक सीढ़ियों के लिए दूसरा परम्परागत सीधा खड़ा हुआ। मैं एक ही समय पर दोनों को बाहर लाई, अपने घर के एक स्तर से दूसरे स्तर तक जाते हुए। जब एक की तार निकल गई, मैं तेजी से कुछ सीढ़ियाँ नीचे पहुँच गई और तारों के गुच्छे में फँस गई। मैंने अपने आपको सीढ़ी के मध्य में पाया और एक टखने के बल गिरी। यहाँ पर भंयकर टूटने की आवाज़ आई। केवल दो रातें पहले, मैंने चर्च में एक बुधवार शाम की

टेस्टीमनी मीटिंग में भाग लिया था, जहाँ पर एक मित्र ने अपने ज़ख्मी टखने के उपचार के बारे में बताया था। जो मुझे याद आया वह था कि उसने एक दृढ़ निश्चय किया था, कि वह प्रभावित नहीं होगी।

चाहे मैंने तुरन्त ध्यान दिया कि मेरे पैर के एक तरफ सूजन हो गई थी, मैंने दूसरी तरफ देखा और फैसला किया कि मैं बार-बार यह घोषित करूंगी कि मैं प्रभावित नहीं थी। जो कुछ मैं देख सकती थी और जानती थी या महसूस कर सकती थी वह था एक प्रमाण जिसे परमेश्वर दिव्य मन, सर्वश्रेष्ठ ज्ञान के नाते जानता था। मुझे चोट के बारे में अज्ञानी, भौतिकता पर आधारित मतों को स्वीकार नहीं करना था। यह इतना अद्भुत विचार था—कि चोट, बीमारी, कमी, या निराशा के मत में कोई भी ज्ञान नहीं है।

जैसे मैं सीढ़ियों का सहारा लेकर बैठी हुई थी, दिव्य संदेश एक के बाद एक आने शुरू हो गए। चोटों के उपचार जो मेरे परिवार और मुझे मिले थे, वह जो मैंने चर्च के सदस्यों, लैक्चरों, क्रिश्चियन साँयस पत्रिकाओं और कहीं से सुने थे। आध्यात्मिक सत्य मेरे विचार में आए; उदाहरण के तौर पर, कि डर मेरी सोच को नियन्त्रित नहीं कर सकता क्योंकि परमेश्वर में डर का कोई आधार नहीं है; कि हरकत परमेश्वर देता है और सुनिश्चित करता है; कि कुछ भी मुझे पूरी तरह से मेरे उपचार के उद्देश्य को पूर्ण करने से नहीं रोक सकता; कि समय एक उपचारक नहीं है; और यह कि एक दुर्घटना दिव्य मन के साम्राज्य में घटित हो ही नहीं सकती।

अगला चिंता का विषय था कि आगे मैं क्या करूंगी। मेरे परिवार को और मुझे हड्डियों के एक्स-रे करवाने और उन्हें व्यवस्थित करवाने के बाद काफी उपचार मिले और वह भी मिले जहाँ हमने शुरू से ही प्रार्थना पर भरोसा रखा, ध्यान में रखते हुए कि “क्रिश्चियन साँयस हमेशा से ही सबसे निपुण सर्जन है, परन्तु सर्जरी उपचारों की वह शाखा है जिसे अन्त में ही मान्यता मिलेगी (साँयस एण्ड हैल्थ पृष्ठ 402)। मैंने निर्णय लिया कि मैं अपने कमरे में जाऊंगी, अपनी बाइबल और साँयस एण्ड हैल्थ निकालूंगी, और चुनाव करने से पहले प्रार्थना करूंगी। किसी तरह से मैं ऊपर चली गई और शांत होकर सुनने के लिए अपनी आँखें बन्द कर ली। दर्द के बावजूद, यह बहुत शांति देने वाला था, क्योंकि मैं जानती थी कि मुझे जवाब मिलेगा। कुछ मिनटों के बाद, मुझे तीव्र इच्छा हुई कि मैं साँयस एण्ड हैल्थ झटके से खोलूँ। मैंने केवल एक वाक्य पढ़ा: “आप अपनी शक्ति को कमज़ोर या नष्ट करते हो जब आप आध्यात्मिक साधनों के सिवाए किसी और का सहारा लेते हो” (पृष्ठ 181)। जिस जवाब की मुझे ज़रूरत थी वह यही था।

जल्द ही दर्द कम हो गया, और मैं कभी भी व्यक्त नहीं कर सकती, न ही मैं कभी भूल सकूंगी, उस अकथित शांति को जो मैंने महसूस की। मैंने इस सत्य को तहे दिल से अपने प्रेममयी पिता-माता परमेश्वर की तरफ से एक वचन की तरह स्वीकार किया कि वह इस परिस्थिति को संभाल लेगा। वह इसे करने में पूरी तरह से सक्षम था। और मैंने अपना हाथ उसके हाथ में रखा। वास्तव में, यहाँ कोई डर, संदेह, या चिंता नहीं थी जो किसी भी तरह इस उपचार को रोक सके। कुछ समय प्रार्थना करने के बाद, मैंने पाया कि बेशक मैं एक दिन के लिए मुश्किल से चल पाती थी, मैं इतनी खुश, शांत और आशावादी थी कि गतिशीलता का अभाव मुझे परेशान न कर सका। मैं अप्रभावित थी।

बेशक मेरा टखना बहुत सूजा हुआ, नाजुक, और बेरंग था, यह स्पष्ट था कि वही मन जिसने मुझे अद्भुत संदेश दिए जैसे ही मैंने प्रार्थना की “उपस्थित थे” मेरा उपचार कर रहे थे और मुझे सुरक्षित रख रहे थे। मैंने अपनी सोच को उपलब्ध अच्छाई और परमेश्वर की मृदु देखभाल पर निरन्तर केन्द्रित किया और मैंने उसके अंसख्य फरिश्तों को सुना मुझे हर तरफ से सहारा देते हुए और आराम देते हुए। (देखें भजनसंहिता 71:21)

अगली दोपहर मैं अपने एक मित्र के साथ बाहर दोपहर के खाने पर जाने में सक्षम थी, और दो दिन में मेरा पैर इतना बेहतर था कि मैं सैर पर जा सकी। चार दिन में, मैं जॉगिंग कर रही थी।

मैं बहुत आभारी हूँ कि हम घोषणा कर सकते हैं कि हम विषमता से उसी तरह प्रभावित नहीं हैं जैसे सारे ब्रह्माण्ड का परमेश्वर जो कि हमारा मन है। इसलिए अगली बार कोई परेशानी आप की सोच में पैर जमाने की कोशिश करे, अपने हाथ को परमेश्वर के हाथ में रखने की कोशिश करो और आग्रह करो कि, “मैं प्रभावित नहीं हूँ।”